# कला प्रतिभा सम्मान समारोह– 2022–23

## कार्यक्रम का वर्ष– 2022–23

1. **विभाग का नाम**– पाठ्यक्रम शोध एवं विकास विभाग, एस.सी.ई.आर.टी. देहरादून।
2. **कार्यक्रम का नाम**– कला प्रतिभा सम्मान समारोह– 2022–23 कला प्रतिभा सम्मान (शिक्षक एवं छात्र) **।**
3. **कार्यक्रम का उद्देश्य**– उत्तराखण्ड के शास्त्रीय, स्थानीय लोककला तथा विज्ञापन (मौलाराम लघुचित्र परम्परा, ऐपण कला, रम्माण आदि उत्सवों में प्रयोग होने वाले मुखौटे कला का नवीन सृजन तथा राज्य के सामाजिक सरोकारों का प्रचार प्रसार करने हेतु पोस्टर चित्रांकन) कला को अकादमिक रूप से परिष्कृतकर शिक्षक व विद्याार्थियों का राज्यस्तरीय समूह तैयार करना।
4. **कार्यक्रम का विवरण**– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में कला और संस्कृति के संवर्धन हेतु कला शिक्षा से सम्बद्ध शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के लिये कलात्मक कार्यक्रम–उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा में कला शिक्षा का एक विशेष महत्व है। कला शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों का चहुमुखी विकास होता है साथ ही विद्यालय के वातावरण में विभिन्न तरह के सौन्दर्य का विस्तार भी होता है। इस सौन्दर्य को बनाए रखने में सृजनशील शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की अहम् भूमिका होती है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि ऐसे सृजनशील शिक्षकों तथा विद्यार्थियों का मनोबल सदैव ऊँचा बना रहे। इसलिए समय–समय पर होने वाली कलात्मक गतिविधियां इन शिक्षकों तथा छात्रों में ऊर्जा का संचार कर नये–नये क्रियात्मक और सृजनात्मक कार्यों के लिए मार्ग प्रशस्त करती हैं इसलिये इस वर्ष शिक्षकों के साथ विद्यार्थियों को भी कला प्रतिभा सम्मान समारोह में सम्मिलित किया जा रहा है। इन शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की सृजनशीलता को प्रोत्साहित, उद्देश्यपरक और अर्थपूर्ण बनाने के लिए एक राज्य स्तरीय शिक्षक कला–प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम की परिकल्पना की गई है। कला विधा के अन्तर्गत शिक्षकों हेतु तीन विधायें पोस्टर चित्रांकन, लोक चित्रकला, लघु चित्रकला तथा छात्रों के लिए शिल्पकला समाहित है। कला की इन चारों विधाओं में 'कला सृजन' का मूल तत्व समाहित है। अतः शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में छुपी हुई प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से **राज्य स्तरीय कला प्रतिभा प्रतियोगिता** का आयोजन किया जा रहा है जिसका उद्देश्य उत्तराखण्ड राज्य के विभिन्न कला विधाओं में पारंगत शिक्षक तथा विद्यार्थियों की प्रतिभा को प्रदर्शन का अवसर मिले और एक कला समूह राज्य स्तर पर गठित की जा सके।

शिक्षक–शिक्षिकाओं तथा विद्यार्थियों की प्रतियोगिता कराए जाने का मुख्य उद्देश्य गुरु–शिष्य को राज्य स्तरीय किसी कला मिशन में साथ–साथ काम कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति को पोषित करना है। मिशन में साथ–साथ काम करने से विद्यार्थियों में अपने गुरु के प्रति सम्मान और श्रद्धा का भाव और अधिक स्थाई होगा। जब विद्यार्थी अपने शिक्षक तथा शिक्षिकाओं को कला का सृजन करते हुए अथवा किसी कलात्मक गतिविधियों (कला प्रतियोगिता, प्रदर्शनी, कला शिविर, कला प्रशिक्षण, कला मेला तथा कला उत्सव) में प्रतिभाग करते हुए देखते हैं तो उनमें अपने गुरु के प्रति सम्मान का भाव उत्पन्न होता है तथा कला प्रवृत्ति को बल मिलता है। छात्रों में कला के प्रति रुचि बढ़ती है और उनकी कला में निखार आता है। शिक्षक द्वारा कलात्मक गतिविधियों में प्रतिभागिता विद्यार्थिओं में कला के प्रति ऊर्जा का संचार करता है और कला विषय की गहनता और गम्भीरता को समझने लगते हैं। विद्यार्थिओं को कला मिशन में शिक्षक के साथ काम करने का अवसर मिलता है जोकि एक छात्र के लिए अप्रतिम अनुभव होता है। यह शिक्षक व छात्र कला प्रतियोगिता एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एवं परम्परा का प्रतीक है जो शिक्षक और विद्यार्थिओं में कलात्मक प्रकृति को बहुत ही सशक्त बनाएगा और आने वाले समय में कला अपने नए कलेवर और पराकाष्ठा पर होगी। यह कलात्मक कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना को पूरी तरह से बलवती बनाता है।

उक्त प्रतियोगिता ब्लॉक स्तर पर ऑनलाइन तथा जनपद स्तर पर ऑफलाइन (ऑनस्पॉट) आयोजित की जायेगी। इसके पश्चात् यह प्रतियोगिता राज्य स्तर पर आयोजित की जायेगी जोकि ऑफलाइन आयोजित होगी। इस आयोजन में उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा के अन्तर्गत सरकारी तथा अर्द्धसरकारी विद्यालयों के सहायक अध्यापक–प्रवक्ता तथा विद्यार्थिओं द्वारा प्रतिभाग किया जायेगा। शिक्षक/शिक्षिकाएं ऐच्छिक रूप से किसी एक विधा में प्रतिभाग करेंगे/करेंगी। इसी प्रकार विद्यार्थी (कक्षा 9 से 12 तक के छात्र–छात्राएं) केवल शिल्प कला में प्रतिभाग करेंगे। स्मरण रहे अध्यापक/अध्यापिका चित्रकला के किसी एक विधा ही में प्रतिभाग कर सकते हैं। प्रतियोगिता के समस्त नियम एवं उसके सम्बन्ध में निर्धारित बिन्दु विस्तृत रूप में पत्रालेख के साथ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) अध्यापकों के लिए कला प्रतियोगिता हेतु चित्रकला की तीन विधाएं हैं–

1. पोस्टर चित्रांकन।
2. लोक चित्रकला।
3. लघु चित्रकला।

(ख) विद्यार्थियों (कक्षा 9 से 12 तक की छात्र–छात्राएं) के लिए कला प्रतियोगिता हेतु शिल्पकला के अन्तर्गत–

4.मुखौटा कला।

5. **कार्यक्रम का टार्गेट ग्रुप**– सरकारी तथा अर्द्धसरकारी विद्यालयों के शिक्षक (एल.टी. तथा प्रवक्ता) एवं विद्यार्थी (कक्षा 9 से 12)।

6. **कार्यक्रम का आउटकम**– विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का कला अभिमुखीकरण हुआ, अच्छे व दक्ष कलाकारों का समूह तैयार हुआ, राज्य स्तर पर विकसित कला सम्बन्धी कार्यों में उनकी सक्रीयता बढ़ी, स्थानीय लोककला के प्रति शिक्षकों तथा विद्याार्थियों की समझ विकसित हुई। कला के व्यावसायिक पक्ष को समझते हुए पोस्टर के माध्यम से सामाजिक सरोकारों को प्रकट कर पाने में सक्षम हो रह हैं। राज्य स्तर पर एक ऐसा समूह तैयार हो रहा है जो कलात्मक कार्यों को करने के साथ ये समझ बना पाने में सक्षम हो रहे हैं कि कला का वास्तविक मर्म क्या है?